गये हैं उनमें स्वच्छता का भी स्थान है (महाभारत –शांतिपर्व , 60/8)। ऋग्वेद में कहा गया है कि अंतरिक्ष में कल्याणकारी हवा चलती है और हवा एक स्थान पर बंद न होकर स्वच्छन्द रूप से सर्वत्र प्रवाहित होती रहे (ऋग्वेद – 6/12/13)। समस्त धार्मिक कृत्यों एवं अनुष्ठानों में जल के प्रयोग के कारण भारतीय संस्कृति में जल की स्वच्छता एवं पवित्रता का विशेष महत्त्व है। जल को देवता के रूप में प्रतिष्ठित कर ऋषियों ने उनसे प्रार्थना की है कि हे आपो देवता! आप हमें स्वास्थ्य एवं शांति प्रदान करें, नदियों एवं जलाशयों का जल मधुर हो, साथ ही सभी को रोगमुक्त करने वाला जल उपलब्ध हो (अथर्ववेद – 19/2/1–2)। प्राचीन समय में जल दूषित न हो इसका बड़ा ध्यान रखा जाता था, क्योंकि स्नान, तर्पण, आचमन आदि समस्त शुद्धि

प्रत्येक घटक को देवतुल्य मानकर संरक्षित एवं विकसित करने का प्रयास–पुरूषार्थ अपनाना होगा।

मनोज कुमार राव, पी–एच.डी., प्रवक्ता, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत।

संदर्भ सूची

आचार्य, श्रीराम शर्मा (1972). अध्यात्मवाद ही क्यों ? मथुरा, भारत : अखड ज्योति संस्थान, (पृ. 29)।